Vol 4 Issue 6 March 2015

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.ror.isrj.org

Review Of Research
ISSN:-2249-894X
Impact Factor : 3.1402(UIF)
Vol. 4 | Issue. 6 | March. 2015
Available online at www.ror.isrj.org

परमतत्त्व विवेचन में सम्प्रदायगत वैषम्य

t;ohj flg rSuxfj;k

v}r onkUr n'ku foHkkx] v-i- flg fo'ofo|ky;] jhok ¼e-i-½

सारांश – सम्पूर्ण वेदान्त दर्शन एवं उसके विभिन्न सम्प्रदाय औपनिषदिक सिद्धान्त के व्याख्यापरक दर्शन है, किन्तु उनमें से मौलिकता की दृष्टि से रामानुजाचार्य दर्शन का स्थान शंकराचार्य दर्शन के समकक्ष माना जाता है। साधारण तौर पर ये दोनों वेदान्त सम्प्रदाय एक दूसरे के पूरक एवं एक ही सिद्धान्त के दो पहलू हैं। दोनों अद्वैत मत के समर्थक हैं, किन्तु शांकर वेदान्त जहाँ निर्विशेष ब्रह्मात्मैक्य पर विशेष बल देता है। वहाँ रामानुजाचार्य वेदान्त सविशेष ब्रह्म और तादात्म जीव–जगत् के बीच शरीरात्मभाव सम्बन्ध द्वारा एकेश्वरवाद पर। रामानुजाचार्य ने भक्तिपरक वेदान्त को पुष्ट आधार दिया और उसका विकास भी किया। इस तरह यह कहना समीचीन होगा कि शंकराचार्य द्वारा किये गये वेदान्त के प्रति एकपक्षीय न्याय से असन्तुष्ट होकर रामानुजाचार्य ने वेदान्त की व्याख्या इस प्रेरणा से की कि उसके शुद्ध दार्शनिक महत्व को धार्मिक गरिमा के साथ प्रदर्शित किया जा सके, ताकि व्यवहार–परमार्थ का भेद भी मिटे तथा ज्ञान–भक्ति का योग भी बने।

मुख्य शब्द – वेदान्त दर्शन, विभिन्न सम्प्रदाय एवं वैषम्य ।

प्रस्तावना –

योगवासिष्ठ के अनुसार ब्रह्म जगत् की सृष्टि करते हैं। वह ब्रह्म परब्रह्म की सर्जन–शक्ति का मूर्तिमान आकार है, मन को ब्रह्मा का स्वरूप और ब्रह्म को मन का स्वरूप कहा गया है। मन का स्वरूप धारण करके ब्रह्म सृष्टि करता है। उस ब्रह्मा की उत्पत्ति परब्रह्म से होती है। सृष्टि के समय ब्रह्म का स्पन्दन होता है जो उसका स्वाभाविक रूप है। उनमें वह स्पन्दन उनकी लीला से होता है। आत्मतत्त्व की संकल्प–शक्ति द्वारा निर्मित रूप को ब्रह्म कहा जाता है। ब्रह्म कर्म–बन्धन से मुक्त होकर रहता है। ब्रह्म से उत्पन्न जगत् मनोमय कहलाता है।[1]

शंकराचार्य के पहले भर्तृप्रपंच आदि कुछ आचार्य हुए हैं, परन्तु उन्होंने उस अद्वैत दर्शन का प्रतिपादन नहीं किया जो शंकराचार्य को अभीष्ट था। भर्तृप्रपंच को भेदाभेदवादी कहा जा सकता है, न कि अद्वैतवादी। इसी प्रकार द्रविड़ाचार्य को अद्वैतवादी कहना कठिन हो जाता है क्योंकि अद्वैत और विशिष्टाद्वैतवादी दोनों उनको अपने सिद्धान्तों के समर्थक के रूप में उद्धृत करते हैं। इस प्रकार पूर्ववर्ती अद्वैतवादियों में गौड़पाद ही एक ऐसे आचार्य हैं जिनको शंकराचार्य अपना पूर्वाचार्य मानते हैं।

गौणपाद ने भी जगत् को मिथ्या मात्र बताया है। यह द्वैत–रूप प्रपंच माया मात्र है। परमार्थ–रूप से यह अद्वैत है। यथार्थ में भेद नामक कोई वस्तु नहीं है। यह सारा प्रपंच ब्रह्म का विवर्त मात्र है। वैतथ्य प्रकरण में चौथे श्लोक की टीका में शंकराचार्य लिखते हैं कि जाग्रत् अवस्था में दृश्यमान भाव–पदार्थ मिथ्या है; क्योंकि वे दृश्य हैं, स्वप्न में दीखने वाले भाव–पदार्थों की तरह।[2] गौड़पाद की दूसरी युक्ति यह है कि जो आदि में नहीं है और अन्त में नहीं है, वह वर्तमान काल में भी वैसा ही है – आदावन्ते च यन्नास्ति तत्तथा।[3]

विश्लेषण –

शंकराचार्य के विरुद्ध दूसरे हिन्दू दार्शनिकों की मुख्य शिकायत यह है कि शंकराचार्य मायावादी हैं। जहाँ तक एकतत्त्ववाद के सिद्धान्त का प्रश्न है वह ऋग्वेद (पुरुष–सूक्त, नासदीय–सूक्त), बृहदारण्यक, छान्दोग्य, मुण्डक आदि उपनिषदों, भगवद्गीता और मण्डन मिश्र की 'ब्रह्मसिद्धि' में भी (जो शंकराचार्य की कृतियों से पहले की रचना है) प्रतिपादित है। विष्णु पुराण, श्रीमद्भागवत जैसे पुराणों में भी विश्व के कारणभूत एक परमात्म तत्त्व की कल्पना है। इस दृष्टि से शंकर के अद्वैत की भेदक

(व्यावर्तक) विशेषता मायावाद का सिद्धान्त है।

शंकराचार्य वेदान्त में मोक्षवाद का निरूपण विशेष महत्वपूर्ण है। सांध्य की भाँति अद्वैत वेदान्त भी जीवन्मुक्ति की सम्भावना स्वीकार करता है। मोक्षवाद की दृष्टि से अद्वैत मत सांख्य से भी अधिक संगत और संतोषप्रद है। विवेच्य विषयान्तर्गत यह माना जा सकता है कि शंकराचार्य पर महायानी बौद्ध दर्शनों का कुछ प्रभाव पड़ा था, विशेषतः उनकी दो सत्यों की कल्पना महायान सम्प्रदायों से ली गयी जान पड़ती है। शंकराचार्य के बौद्धों से प्रभावित होने के पक्ष में यह भी कहा जा सकता है कि उनके दादा–गुरु गौड़पादलिखित् 'माण्डूक्यकारिका' पर बौद्ध चिन्तन की स्पष्ट छाप है। उक्त कारिकाओं पर शंकराचार्य के नाम से परिचित लेखक की टीका या भाष्य भी पाया जाता है। कुछ विद्वानों जैसे श्री विधुशेखर भट्टाचार्य के मत में यह भाष्य शंकराचार्य की कृति नहीं है। किन्तु शंकराचार्य के 'ब्रह्मसूत्रभाष्य' में श्री गौड़पादाचार्य का सादर उल्लेख मिलता है। इससे ये अनुमान किया जा सकता है कि वे गौड़पाद की शिक्षाओं से प्रभावित थे।

रामानुजाचार्य के दर्शन के प्रचार ने भक्तिवाद को पुष्ट किया। उनके बाद वेदान्त के अनेक सम्प्रदाय बने। इन सब सम्प्रदायों पर रामानुजाचार्य का प्रभाव लक्षित होता है। मौलिकता की दृष्टि से भक्ति–परक वेदान्तीय सम्प्रदायों में विशिष्टाद्वैत सबसे मौलिक और दार्शनिक दृष्टि से अधिक महत्वपूर्ण है। विशिष्टाद्वैत को श्रीसम्प्रदाय भी कहते हैं। स्वयं रामानुजाचार्य अपने दर्शन को बोधायनवृत्ति पर आधारित बतलाते हैं; वे उसे द्रमिड़, टंक, गुहदेव और नम्मालवार की परम्परा को अग्रसर करने वाला भी मानते हैं। वास्तव में रामानुजाचार्य का दर्शन तथा अन्य वैष्णव सम्प्रदाय प्राचीन भागवत धर्म की परम्परा को अग्रसर करते और उसे दार्शनिक आधार देते हैं। श्रीवैष्णव सम्प्रदाय के प्रसिद्ध शिक्षक नाथमुनि ने तमिल के आलवार सन्तों की वाणी को प्रस्थानत्रयी के समान महत्व दिया और इस प्रकार 'उभयवेदवेदान्त' संज्ञा का प्रचार किया।

शंकराचार्य और रामानुजाचार्य के बीच में भास्कर नाम के आचार्य हुए थे जिन्होंने ब्रह्मसूत्र पर भाष्य लिखा। भास्कर ने शंकराचार्य के मायावाद का खास तौर से खण्डन किया। उनका मत भेदाभेद कहलाता है। उनके परवर्ती यादवप्रकाश ने भी एक प्रकार के भेदाभेद को अंगीकार किया। रामानुजाचार्य के बाद के वैष्णव सम्प्रदायों में मध्वाचार्य का द्वैत वेदान्त, निम्बार्काचार्य का द्वैताद्वैत, वल्लभाचार्य का शुद्धाद्वैत और चैतन्य सम्प्रदाय का अचिन्त्यभेदाभेद प्रसिद्ध है।

रामानुजाचार्य अपने दर्शन का उद्देश्य बोधायन के मत का पुनराख्यान करना चाहते हैं। यूँ तो सगुण ब्रह्म की चर्चा कहीं–कहीं संहिताओं में, श्वेताश्वतर आदि उपनिषदों में, भगवद्गीता, महाभारत, पांचरात्र संहिताओं, विष्णु पुराण आदि में पूर्वकाल से होती आयी थी। इस दृष्टि से रामानुजाचार्य का विशिष्टाद्वैत भारतीय चिन्तन–धारा को एक अति प्राचीन परम्परा का प्रतिनिधित्व कहा जा सकता है।

ईसा की तेरहवीं शताब्दी में रामानुजाचार्य–वेदान्त दो शाखाओं में विभक्त हो गया। इस विभाजन का आधार साहित्यिक मतभेद था। पिल्लै लोकाचार्य (1246–1327 ई.) जो तेंकलै सम्प्रदाय के संस्थापक कहे जाते हैं, तमिल प्रबन्धों को अधिक विश्वसनीय मानते हैं। उनके अनुसार तमिल आगमों की महत्ता संस्कृत आगम–ग्रन्थों और बाद की संस्कृत कृतियों से अधिक है। लोकाचार्य ने अठारह गन्थ लिखे हैं। 'तत्त्वत्रय' और 'अर्थपंचक' संस्कृत में लिखे गये हैं। जो विशेष महत्वपूर्ण हैं। वरवर मुनि ने 'तत्त्वत्रय' की टीका लिखी है। 'बाद्‌ग्लै' नामक दूसरे सम्प्रदाय के प्रवर्तक श्री वेदान्तदेशिक (1300 ई.) हैं। वेदान्तदेशिकाचार्य बहुमुखी प्रतिभा के लेखक हैं। इन्हें संस्कृत और तमिल दोनों भाषाओं के ग्रन्थ समस्त रूप से मान्य हैं। इनकी रचनाओं में 'न्यायसिद्धांजन' और 'तत्त्वमुक्ताकलाप' मौलिक ग्रन्थ हैं। 'तत्त्वमुक्ताकलाप' की 'सर्वार्थसिद्धि' टीका उन्होंने स्वयं लिखी है। 'तत्त्वटीका' और 'तात्पर्यचन्द्रिका' क्रमशः रामानुजाचार्य के 'श्रीभाष्य' और 'गीताभाष्य' पर वेदान्त–देशिक की टीकाएँ हैं। वेदान्तदेशिक ने 'संकल्पसूर्योदय' नाटक की रचना भी की है। तमिल भाषा में 'रहस्यत्रयसार' और 'परमतभंग' इनकी दार्शनिक कृतियाँ हैं। 'शतदूषणी की रचना इन्होंने अद्वैत दर्शन की आलोचना के लिए की है। इस प्रकार अपनी कृतियों के आधार पर वेदान्तदेशिक रामानुजाचार्य के अनुयायियों में सर्वप्रमुख हैं। इस कपोल कल्पित सिद्धान्त का प्रभाव शंकराचार्य के अद्वैत दर्शन के समक्ष क्षीण और सारत्वहीन प्रतीत हुआ।

इसके बावजूद रंग रामानुजाचार्य, आत्रेय रामानुजाचार्य, मेघनादारि, श्रीनिवासाचार्य जैसे गण्यमान पण्डितों ने भी अपनी–अपनी कृतियों द्वारा रामानुज–सम्प्रदाय के दार्शनिक साहित्य को समृद्ध किया है। इनमें श्री रंग रामानुज के उपनिषद्–भाष्य विशेष महत्वपूर्ण है। रंग रामानुजाचार्य (16वीं शती) ने उपनिषद्–भाष्य लिखकर अपने सम्प्रदाय के विरुद्ध इस आरोप का खण्डन किया कि विशिष्टाद्वैत का उपनिषदों का समर्थन नहीं प्राप्त है। श्रीनिवासाचार्य (सत्रहवीं शती) द्वारा लिखित 'यतीन्द्रमतदीपिका' रामानुज दर्शन के प्राथमिक अध्ययन के लिए उपयोगी संस्कृत रचना है। इस पुस्तिका में सीधे और सरल शब्दों में रामानुज दर्शन को सराहनीय ढंग से प्रस्तुत किया गया है। इसमें विशिष्टाद्वैत दर्शन के मूलभूत सिद्धान्त संगृहीत है। यह ग्रन्थ इस सम्प्रदाय के विचारकों द्वारा कम से कम 28 ग्रन्थों में विकसित सिद्धान्त का संक्षिप्त रूप है। ऐसा इसी ग्रन्थ के अन्त में बतलाया गया है। श्री वासुदेव शास्त्री अभ्यंकर ने हाल ही में इस पर अपनी 'यतीन्द्र मतदीपिका–प्रकाश' नामक सुन्दर टीका लिखी है।

सांख्य की तरह रामानुजाचार्य भी जीवों की अनेकता के समर्थक हैं। जीवात्मा अहमर्थ–प्रत्यय–वाच्य है और विभिन्न 'अहम्' परस्पर भिन्न है। जीवत्माओं के बीच यह भिन्नता मोक्ष की स्थिति में भी बनी रहती है, यद्यपि सभी मुक्त पुरुष समान होते हैं और मुक्त जीवों में गुणात्मक भेद नहीं किया जा सकता। परन्तु उनमें संख्यागत भेद रहता है। अर्थात् जीवात्माएँ अनन्त है, उनकी कोई निश्चित संख्या नहीं है।

प्रत्येक वैष्णव सम्प्रदाय किसी–न–किसी प्राचीन सम्प्रदाय का प्रतिनिधि माना जाता है। विशिष्टाद्वैत श्री सम्प्रदाय से सम्बद्ध है, भेदाभेद सनक सम्प्रदाय से, द्वैत ब्रह्म सम्प्रदाय से, शुद्धाद्वैत रुद्र सम्प्रदाय से तथा अचिन्त्य भेदाभेद या माध्व गौड़ेश्वर सम्प्रदाय भी ब्रह्म सम्प्रदाय से ही सृजित हुआ। स्मार्त–मतावलम्बी शंकराचार्य के विपरीत इन्हें आगमिक या आगम–मतानुयायी कहा जाता है। शंकराचार्य के सदृश इन आचार्यों में से प्रत्येक ने भी 'ब्रह्मसूत्र' पर भाष्य लिखकर वेदान्त दर्शन की व्याख्या (अलग–अलग) प्रस्तुत की, जो प्रायः रामानुजाचार्य को भक्तिपरक सविशेष ब्रह्मवादी व्याख्या के निकट और शंकराचार्य के

अद्वैतवाद से काफी भिन्न है।

किसी न किसी स्तर पर वेदान्त के समस्त भेदाभेद के सिद्धान्त को स्वीकार करते हुए पाये जाते हैं। किन्तु कोई सम्प्रदाय भेद पर अधिक बल देता है, तो कोई अभेद पर। शंकराचार्य जीवात्मा और ब्रह्म के अभेद को मानते हुए भी व्यावहारिक स्तर पर कार्य–कारण में भेदाभेद भी मानते हैं। रामानुजाचार्य जीव, जगत् और ब्रह्म के बीच अभेद पर जोर देते हैं तो कार्य–कारण में भेदाभेद भी मानते हैं।

भास्कर का मत है कि ब्रह्म एक और अनेकरूप है। 'ब्रह्म' शब्द ने सर्वसम्पन्न ईश्वर को ही मानना सर्वथा युक्तियुक्त है। कार्य–रूप में नानात्व और कारण–रूप में एकत्व या अभेद है। जीवों का परस्पर भेद ही है; उनका परमात्मा से अभेद उसी प्रकार है जैसे फेन–तरंग आदि का समुद्र से।

रामानुजाचार्य के समान निम्बार्काचार्य प्रत्यक्ष, अनुमान और शब्द, तीन प्रमाणों को मानते हैं। इन्द्रिय और विषय के संनिकर्ष से जन्य ज्ञान प्रत्यक्ष है जो ब्रह्म और आन्तर दो प्रकार का होता है। बाह्य पदार्थों का प्रत्यक्ष इन्द्रियज है तथा सुख–दुःख आदि आन्तरिक विषयों का इन्द्रिय–निरपेक्ष आन्तर। व्याप्ति पर निर्भर ज्ञान अनुमान है। इन दो ज्ञानों से अतिरिक्त एवं सर्वाधिक प्रामाणिक ज्ञान श्रुतिमूलक होता है।

श्रुति–श्रवण–मनन–निदिव्यासन का विधान करती है। वस्तु के साक्षात्कार का कारण निदिध्यासन है, उसके बहिरंग साधन श्रवण और मनन है। आचार्य के मुख से वाक्यार्थ का ग्रहण श्रवण है, श्रुत्यनुकूल तर्क से उस पर विशेष विचार मनन है तथा ध्यानपूर्वक उपदिष्ट वस्तु का साक्षात्कार निदिध्यासन है। उनका अपूर्व विधान श्रुति द्वारा हुआ है।

निम्बार्काचार्य रामानुजाचार्य के समान सत्ख्यातिवादी हैं। अनिर्वचनीय ख्याति, अख्याति, अन्यथाख्याति जैसे सिद्धान्तों का खण्डन करते हुए सत्ख्यातिवादी निम्बार्काचार्य का कथन है कि प्रमाण के बल पर भ्रान्त ज्ञान का नाश उसी प्रकार होता है जिस प्रकार पुण्य से पाप का या औषधि से रोग का।

भक्ति–सम्प्रदाय के अनुयायी होते हुए भी निम्बार्काचार्य रामानुजाचार्य के समान ज्ञान को महत्वपूर्ण मानते हैं। वस्तुतः ज्ञानात्मक भक्ति मानने का कारण यह है कि सभी वेदान्ती वैदिक ज्ञानकाण्ड के समर्थक हैं। तथापि कर्म आदि को भी महत्व देकर ज्ञान कर्म–समुच्चयवाद की मान्यता भक्ति सम्प्रदाय के इन वैष्णव आचार्यों की विशेषता रही है। अविद्या या कर्म की निवृत्ति एवं आत्मा और ब्रह्म का स्वरूप–ज्ञान मोक्ष है।

यद्यपि अन्य वैष्णव वेदान्त सम्प्रदायों के समान मध्वाचार्य का द्वैतवाद भी शंकराचार्य के विरोध में सविशेष ब्रह्मवाद, परिणामवाद, जगत्सत्यत्व, भक्तिवाद आदि सिद्धान्तों का प्रतिपादन करता है, तथापि कुछ अंशों में वैषण या वेदान्त की परम्परा से हट कर वह द्वैतवाद या आत्यन्तिक भेदवाद का समर्थन करता है।

अन्य वैष्णव वेदान्तियों के सदृश मध्वाचार्य भी ज्ञान के सविशेष–विषयत्व, स्वतः प्रामाण्य, वस्तुवाद एवं ब्रह्मार्थवाद का समर्थन करते हैं। तथा निर्विशेषत्व और विज्ञानवाद का खण्डन। इनकी ज्ञान–मीमांसा न्याय–वैशेषिक की अपेक्षा संख्य के अधिक निकट प्रतीत होती है।

मध्वाचार्य का वस्तुवादी द्वैतवाद ईश्वर, जीवों और जगत् की पारमार्थिक सत्ता स्वीकार करता है। प्रकृति, जीव और ईश्वर भिन्न तत्त्व हैं, मैं अपनी–अपनी सत्ता रखते हैं क्योंकि इनकी प्रतीति होती है।

मध्वाचार्य के दर्शन में भेद का विशेष महत्व है। बल्लभ ने शंकर की माया का, भास्कर की उपाधि का, रामानुजाचार्य के तत्त्वत्रय का, निम्बार्काचार्य के तथा मध्वाचार्य के भेद का, शाक्तों की शक्ति की निमित्तकारणता का प्रतिवाद करते हुए सच्चिदानन्द–स्वरूप एवं सर्वधर्मविशिष्ट ब्रह्म तथा जीव–जगत् के परस्पर सम्बन्ध की समस्या का एक नया समाधान प्रस्तुत किया। एकमात्र तत्त्व ही ब्रह्म है और जड़–जीवात्मक जगत्–रूप कार्य भी ब्रह्म है, अतः दोनों का शुद्ध अद्वैत है।

निष्कर्ष –

इस प्रकार परम् तत्त्व विवेचन की दृष्टि से अद्वैत वेदान्त के विभिन्न सम्प्रदायों में साम्य और वैषम्य का स्वरूप होते हुए भी आचार्यों ने अपनी साम्प्रदायिक मान्यताओं के साथ चिन्तन की दृष्टि से अक्षम शक्ति का प्रयोग करते रहे हैं। वेदान्त दर्शन तो ब्रह्ममीमांसा एवं ईश्वरमीमांसा है ही। यद्यपि अद्वैत दर्शन में ब्रह्म एवं ईश्वर में भेद है, पारमार्थिक स्तर पर ब्रह्म की ही एकमात्र सत्ता स्वीकृत है, तथापि उसमें व्यावहारिक जगत् के लिए ईश्वर की सत्ता स्वीकार की गयी है। उसे सृष्टिकर्ता स्वीकार किया गया है। रामानुजाचार्य के विशिष्टाद्वैत दर्शन में तो ईश्वर एवं ब्रह्म अभिन्न हैं। इसमें ईश्वर को ही जगत् का कारण स्वीकार किया जाता है। ईश्वर–भक्ति या ईश्वर–शरणागति ही जीव को सभी दुःखों से छुटकारा दिलाकर मोक्षलाभ, ईश्वरलाभ कराता है। भारतीय दर्शन आंशिक रूप में ईश्वरवादी है। इसमें ईश्वरवादी एवं निरीश्वरवादी दोनों प्रवृत्तियाँ दिखाई देती हैं। इसका कारण भारतीय संस्कृति का विचार–स्वातन्त्रय के प्रति प्रेम और विचार–वैविध्य की स्वीकृति है।

संदर्भ –

1.योगवासिष्ठ और उसके सिद्धान्त, पृष्ठ 5, बी.एच. आत्रेय.
2.माण्डूक्यकारिकाभाष्य, 2 / 4.
3.माण्डूक्यकारिकाभाष्य, 4 / 31.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.ror.isrj.org